संगीत एवं नृत्यकलाएँ

कल आज और कल

सम्पादिका
प्रो. (डॉ.) भावना प्रोवर

Scanned with OKEN Scanner

अनुक्रमणिका

प्रस्तावना

1. भारतीय शास्त्रीय संगीत शिक्षा में मल्टीमीडिया तकनीक की भूमिका — 1
   डॉ. अंशुमती
2. चित्रपट संगीतः कल आज और कल — 5
   डॉ. आकांक्षा रस्तोगी
3. तत वाद्य कला–कल, आज, कल — 13
   डॉ. ऐश्वर्या भट्ट एवं तृप्ति जोशी
4. हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीतः कल आज और कल ✓ — 22
   डॉ. अम्बिका कश्यप
5. कत्थक नृत्य प्रस्तुतिकरण का बदलता स्वरूपः कल आज और कल — 30
   डॉ. भावना ग्रोवर
6. राग संगीतः कल आज और कल — 36
   डॉ. चंद्रकिरण घाटे
7. Folk Music: Past Present & Future — 42
   Dr. Gaveesh
8. भारतीय संगीतः एक दर्शन — 45
   डॉ. गीता शर्मा

Scanned with OKEN Scanner

4

हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीतः कल आज और कल

डॉ. अम्बिका कश्यप

हिंदुस्तानी संगीत हमारे जीवन का सुंदर संश्लेषण है, भारतवर्ष की संस्कृति का परिचायक है और भारत की सांस्कृतिक एकता का प्रतीक है। भारतीय साहित्य और भारतीय कला के समान भारतीय संगीत भी शताब्दियों की अमूल्य देन है। कला कोई भी हो यदि वह परंपरागत नहीं है तो वह अजायबघर की वस्तु ही कहलाएगी। संगीत के इतिहास में कला प्रस्तुत करने के लिए तत्संबंध नियमों का अनुसरण आवश्यक है। कला सौंदर्य उपासना का सजीव प्रतीक और उसका अमर माध्यम है। संगीत कला मुख्यतः प्रयोगात्मक कला है तथापि उसका वैज्ञानिक पक्ष भी उपेक्षनीय नहीं। शास्त्र से अभिप्राय अध्धेय विषय की वैज्ञानिक व्यवस्था से है जिसके माध्यम से अनुशासन के साथ शिक्षा की सुविधा संपन्न हो सके। शास्त्र का कार्य निगमात्मक प्रणाली से सिद्धांतों की स्थापना कर कला को स्थायित्व तथा प्रतिष्ठा प्रदान करना है।

लक्ष्य तथा लक्षण में सामंजस्य स्थापन शास्त्र का प्रधान उद्देश्य है। शासन से अभिप्राय केवल नीरस एवं निष्प्राण नियमों के तार्किक प्रतिपादन मात्र से नहीं अपितु कला की चिरंतनता बढ़ाने वाले तत्व चिंतन से है। नादरूपो जनार्दन कला का बीज मंत्र कला की इसी प्रवाहिता को संयत रखने का कार्य शास्त्र है। कला का वही

Scanned with OKEN Scanner

प्रवाहित शास्त्र सम्मत हो सकता है जो कला के मौलिक सिद्धांतों के विपरीत ना होते हुए जन रूचि के अनुकूल हो।

यदि कला सौंदर्य उपासना का सजीव प्रतीक और उसका अमर माध्यम है तो इसमें कोई संदेह नहीं कि हिंदुस्तानी संगीत की प्राचीन कला जिसका जन्म वैदिक युग में हुआ था। हमारी आध्यात्मिक और रसात्मक भावनाओं से पूरी तरह संबंधित है। इसलिए जब हम उसके प्राचीन इतिहास का अध्ययन करते हैं तो यह आवश्यक हो जाता है कि उसके ऐतिहासिक वातावरण और उसकी सांस्कृतिक परिस्थितियों का भी कला के दृष्टिकोण से पूरा निरीक्षण अथवा अध्ययन करें।

संगीत कला का प्रवाह सदैव दो धाराओं में प्रवाहित होता रहा है मार्ग तथा देशी। प्रथम में शास्त्र के अनुबंध के द्वारा कला की परिष्कृता तथा अभिजातता पर ध्यान दिया जाता है। दूसरे में लोक अभिरुचि नियामक तत्व होता है तथा शास्त्र पक्ष गौण होता है। प्रथम के लिए विशिष्ट संस्कार एवं शिक्षा दीक्षा की आवश्यकता होती है। दूसरी संपर्क तथा सहित संस्कारों से प्रसूत होकर सर्वजन बोध्य होती है। दोनों में कलाकार की सौंदर्य अनुभूति का विशिष्ट स्थान रहता है। केवल अंतर यह है कि मार्ग में वह नियमों की सीमा में अबेध रहती है तथा देशी में उसकी अभिव्यक्ति अपेक्षाकृत स्वच्छंद रूप से होती है। साम तथा गंधर्व दोनों का मूलाधार लोक संगीत रहा है और इस दृष्टिकोण से दोनों मूलतः देसी संगीत का प्रतिनिधित्व करते हैं। सामवेद भारतीय संगीत कला का प्राचीनतम निदर्शन है। इसका स्त्रोत तत्कालीन लोक संगीत ही रहा। धार्मिक समारोह से तथा समाज के उच्च वर्ग से संबधित होने के कारण उसमें संस्कार तथा नियमबद्धता की मात्रा बढ़ गई और उसे शिष्ट सम्मत मार्ग संगीत का स्वरूप प्राप्त हुआ। किसी कला के गौरवशाली अतीत काल का केवल स्तुति गान करना ही काफी नहीं है उसके गुणों और उसकी विशेषताओं का कलात्मक विश्लेषण करना भी परम आवश्यक है। उसके व्यवहारिक पक्ष का सजीव ढांचा बगैर जाने हुए हमें उसकी प्रगतिशील शक्तियों का कोई भी ज्ञान नहीं हो सकता। किसी जीवत प्रगतिशील कला का अध्ययन करते समय हमें उसकी परिवर्तनशीलता का भी पता चलता है।

भारतवर्ष में दो पद्धतियां हैं। जहां तक संगीत का संबंध है पहली पद्धति को हम हिंदुस्तानी संगीत के नाम से पुकारते हैं और दूसरे को कर्नाटक संगीत के नाम से हिंदुस्तानी संगीत को कुछ लोग उत्तरी भारत का संगीत भी कहते हैं। जैसे कर्नाटक संगीत दक्षिण भारत का संगीत कहलाता है। संगीत की इन दो अलग–अलग पद्धतियों का वर्णन करने से यह भ्रम नहीं होना चाहिए कि यह एक दूसरे के बिल्कुल

Scanned with OKEN Scanner

विपरीत है। सांस्कृतिक रूप से यह दोनों हमारी सांस्कृतिक आत्मा के दो अनिवार्य अंग है। कर्नाटक संगीत के बहुत से राग हमारे रागों से मिलते जुलते हैं। कुछ के और दूसरे नाम है और वह हमारे रागों से बहुत कुछ अलग भी हैं। हमारे स्वर लगाने का ढंग दूसरा है उनका दूसरा। हमारी तालें ज्यादा कठिन है अधिक विस्तारपूर्वक भी हैं मगर उनसे मिलती–जुलती भी हैं। हमारे रागों का भाव प्रदर्शन उनसे कहीं अधिक व्यापक है और हम अपने रागों को उनसे कहीं ज्यादा सूक्ष्म भावुक और कलात्मक विश्लेषण भी करते हैं। कर्नाटक संगीत अन्य प्रभावों से इतना प्रभावित नहीं हुआ जितना हमारा हिंदुस्तानी संगीत। इसी कारण शायद कर्नाटक संगीत में एक प्रकार की सभ्य कटट्रता है और वह इतना रोचक, भावुक और परिवर्तनशील नहीं जितना हिंदुस्तानी संगीत। अब प्रश्न यहाँ यह आता है कि हिंदुस्तानी संगीत से हमारा क्या अभिप्राय है और उनकी व्यापक और विस्तृत परंपरा क्या है? किस प्रकार उसके गायक, वादक और नृतक इस 100 वर्ष की महान परंपरा के अंतर्गत आते हैं? ऐसा करने से ही एक प्राचीन उन्नतिशील और परिवर्तनशील कला के असली इतिहास का पता चलता है हम सब जानते हैं कि हमारे संगीत का जन्म मंदिरों में हुआ और उसका पहला ऐतिहासिक और सैद्धांतिक संकेत हमें सामवेद से मिला। संगीत के प्राचीन नियमों और सिद्धांतों के अलावा हमें उसकी क्रियाशीलता को भी जानना चाहिए। संगीत का व्यवहारिक रूप और उसके बारे में मुख्य जानकारियां वैदिक काल के पश्चात हिंदुस्तानी संगीत की उन्नति बराबर होती रही और संगीत आगे बढ़ते हुए नए से नए परिवर्तन को अपनाता रहा। परिवर्तनशीलता को स्वीकार करता रहा। वैदिक संगीत कुछ और था और उसके बाद का संगीत कुछ और संगीत कला की दृष्टि से बदलता ही रहा क्योंकि परिवर्तन उसके जीवन का सिद्धांत था। परिवर्तन उसी कला में होते हैं जिसमें जीवित रहने की शक्ति होती है इसलिए हिंदुस्तानी संगीत को एक उन्नतिशील जीवित कला ही मांनते हैं। उसकी आत्मा अमर है। परिवर्तन होते हुए भी हमारे संगीत की आत्मा के स्वभाव और चरित्र में और उसके सिद्धांतों में कोई अंतर नहीं आया क्योंकि संगीत एक जीवित और परिवर्तनशील कला है।

संगीत कला तथा शास्त्र का उद्भव स्वयंभू परमेश्वर से हुआ है। भारतीय परंपरा के अनुसार नटराज शिव नृत्य कला के आदि स्त्रोत है तथा भगवती सरस्वती गीत तथा वाद्यकला की प्रवृत्तिका है। नाट्यशास्त्र के अनुसार गंधर्व के तत्वों को समाहित करने वाला नाट्यवेद स्वयं ब्रह्मा की रचना है। नृत्यकला का तांडव तथा लास्य रूप भगवान शिव तथा पार्वती की देन माना जाता है। हमारे संगीत ने मंदिर मे जन्म पाकर बाद में एक परिमार्जित कला का रूप धारण किया। यह सच है कि उसकी आत्मा में अपूर्व शांति थी परंतु उसके चरित्र में परिवर्तनशीलता भी मौजूद

Scanned with OKEN Scanner

थी। उसकी अलौकिक प्रतिभा में प्रगति शीलता का विशेष गुण था। ऐसा ना होता तो हमारे प्राचीन हिंदुस्तानी संगीत की इतनी उन्नति नहीं होती परिवर्तन के सिद्धांत को स्वीकार करके ही प्रत्येक कला उन्नति करती है।

संगीत के शास्त्रीय पक्ष के साथ–साथ यदि हम उसके व्यवहारिक रूप को जाने तभी हम उसे समझ पाएंगे। जहां एक ओर संगीत के शास्त्र का ज्ञान होना अनिवार्य है वहीं दूसरी ओर एक श्रोता की हैसियत से एक संगीत प्रेमी में संगीत का आनंद लेने की सहृदयता और भावुकता भी होनी चाहिए। जब भी कोई कलाकार या संगीतज्ञ अपने संगीत में किसी भी प्रकार का संशोधन कर उसमें नवीनीकरण का प्रयास करता है तो सर्वप्रथम उसे उपेक्षा ही मिलती है किंतु धीरे–धीरे वह उस समाज में प्रचलित होने लगती है। हमारा संगीत नियमबद्ध है और प्राचीन सिद्धांतों पर अवलंबित है। कोई भी संगीतज्ञ क्यों ना हो वह संगीत के सिद्धांतों का परित्याग नहीं कर सकता। उन सिद्धांतों और नियमों की अवहेलना किए बिना ही वह नवीनीकरण की पद्धति को अपनाता है। प्राचीन संगीत के पुनीत विचारों के आगे सब अपना सिर झुकाते हैं। हिंदुस्तानी संगीत की सैद्धांतिक मर्यादा और उसकी नियमबद्धता दो अनिवार्य गुण हैं परंतु आश्चर्यजनक बात यह है कि इन नियमों से जकड़े हुए इस संगीत में गायक और वादक दोनों के लिए परिवर्तन की पूरी स्वतंत्रता है। अच्छे गायक वादक का यह गुण उसके संगीत की शोभा को और भी अधिक बढ़ा देता है। कलाकार पूरी तरह से स्वतंत्र रहता है कि वह उत्तम था और सुंदरता से अपनी संगीत कला को श्रोतागणों के सामने प्रदर्शित कर सके। हिंदुस्तानी संगीत में जो सबसे बड़ा परिवर्तन आया वह था माइक्रोफोन का आविष्कार। माइक्रोफोन के आविष्कार से गायक या वादक सूक्ष्म से सूक्ष्म ध्वनि को बहुत सहजता से अपने श्रोतागणों तक पहुंचा सकता था। उन दिनों संगीत राजा–महाराजाओं के दरबार में गाने बजाने का प्रचलन था। जहां गायक राजा से बहुत दूर बैठकर अपनी बुलंद आवाज से गाने का प्रदर्शन करता था। प्राचीन समय में ध्रुवपद का बहुत अधिक प्रचलन था। ध्रुवपद की चार बानियाँ अपनी चरम सीमा पर थी। अधिकतर ध्रुपद संस्कृत में ही हुआ करते थे। अकबर और तानसेन के युग के बाद 2 पदों की रचना हिंदी या ब्रजभाषा में होने लगी। प्राय गीत की रचनाओं में कविता का बहुत चमत्कार होता था। ध्रुवपद का अपना एक अलग स्वभाव, चरित्र और वातावरण था, गंभीर शैली और उसके साथ वीणा की संगत।

ईश्वरीय वंदना, स्तुति गान इनसे ही रचनाएं प्रेरित होती थी। संगीत ईश्वरीय आराधना तथा साधना का एक मार्ग था। वह संगीत अपने शुद्ध रूप में था। आत्मिक शांति का स्वरूप था। यह उस परम चित् आनंद स्वरूप के दर्शन कराने का मार्ग

Scanned with OKEN Scanner

प्रशस्त करता था। यह वह संगीत था जिसमें गायक या वादक नाद ब्रह्म में लीन हो जाता था। संगीत में संयम, संतुलन था और शांति भी भगवान शिव तथा अन्य गंधर्व का पुट था। उस संगीत में ध्रुपद में श्रृंगारिकता का प्रचलन बाद में हुआ। वीणा भी ध्रुपद की भांति ही नियमों व सिद्धांतों का पालन करती थी।

समय परिवर्तित हुआ जहां पहले ईश्वरीय वंदन के लिए संगीत गाया बजाया जाता था अब वही संगीत राजाओं को प्रसन्न करने के लिए उनकी प्रशंसा में गाया बजाया जाने लगा उसमें से गंभीरता, ठहराव, संयम, संतुलन धीरे–धीरे सब को परे रखकर भक्ति के स्थान पर श्रृंगारिकता, मनोहरता, संयम, संतुलन के स्थान पर चंचलता को समाहित किया जाने लगा।

ध्रुपद जब अपनी चरम सीमा पर पहुच चुका था तो वह हिंदुस्तानी संगीत की सबसे महान और श्रेष्ठ गायन शैली हो गई थी। ध्रुपद तब संगीत की पूंजी थी। तानसेन जैसे महान गायक ने ध्रुपद गायन को पराकाष्ठा तक पहुंचाया और उसकी रगों में नया रक्त प्रवाहित किया। ध्रुपद गायन के उच्च शिखर पर विराजमान होने के दो–ढाई सौ वर्षों बाद एक बड़ा क्रांतिकारी परिवर्तन संगीत के संसार में हुआ। वह था 18वीं शताब्दी में ख्याल की शैली का जन्म। इस परिवर्तन से ध्रुपद शैली के शांत वातावरण में हलचल सी मच गई। शांति और संतुलन के क्षेत्र में एक नई विलक्षण कल्पना का प्रवेश हुआ। जब भी किसी नई शैली का नवीनीकरण होता है, तो मानो एक हड़कंप सा मच जाता है। वैदिक ऋचांए, प्रबंध ध्रुपद और अब ख्याल। यदि प्राचीन ध्रुपद में चार बानियां हो सकती थी और ध्रुपद के घरानों का जन्म हो सकता था तो ख्याल जैसे क्रांतिकारी परिवर्तन का भी होना निश्चित था। प्रत्येक जीवित कला में परिवर्तन होता है और वह परिवर्तनशील होती है।

हिंदुस्तानी संगीत में ख्याल की शैली का प्रवेश कल्पना ही का प्रवेश था। ख्याल शब्द का अर्थ है 'कल्पना' जिसकी कोई सीमा ना हो और जो पूर्ण रूप से विलक्षण और स्वतंत्र हो। ध्रुपद के कड़े अनुशासन का विरोध संगीत की कल्पना प्रसूत नई भावनाओं ने आरंभ कर दिया। ख्याल की शैली में दिल को लुभाने वाला आकर्षण था और संगीत के विद्यार्थी उसकी तरफ झुक पड़े। स्वरों के नाजुक और भावपूर्ण बहलावें, शब्दों का मधुर और भावुक उच्चारण, शब्दों के साथ राग की बढ़त और स्वरों के साथ शब्दावली का विस्तार, छोटे–छोटे स्वरों के टुकड़े, बोलतान, तानें, मीड़, सूत, मुरकी, कण, स्वरों की मौलिक और भावुक व्याख्या, सम की सुंदरता और आसानी से दिखाना, स्थाई और अंतरे को संवारना और सजाना, स्वरों का आनंद लेना और अपनी कल्पना शक्ति की सहायता से राग के स्वरों की नई–नई व्याख्या करना और अपनी गायकी को रोचक भावपूर्ण, प्रभावशाली और वजनदार बनाना।

Scanned with OKEN Scanner

स्वयंभू परमेश्वर से आरंभ हुआ संगीत धीरे–धीरे कैसे परिवर्तित होता गया। मंदिरों में जो संगीत स्वांत सुखाय के लिए गाया जाता था तो धीरे–धीरे राजाओं के प्रशस्ति गान बनते चले गए। राजाओं से निकलकर यह संगीत वेश्याओं और कोठे पर पल्लवित होने लगा। भक्ति तथा वीर रस का स्थान लिया श्रृंगारिकता ने और श्रृंगारिकता का स्थान लिया सास, ननद और पिया ने। जैसी–जैसी सामाजिक परिस्थितियां परिवर्तित होती गई संगीत उन्हें स्वीकार करता चला गया। जहां एक और माइक्रोफोन ने संगीत में एक नई क्रांति ला दी थी वही मींड़ युक्त गाने की जगह खड़े गाने का प्रचलन होने लगा क्योंकि माइक्रोफोन आपकी सूक्ष्म से सूक्ष्म ध्वनि को श्रोताओं तक पहुंचा देता है और यदि जरा सा भी उसमें बेसुरापन होगा तो श्रोताओं को एकदम से पता चल जाएगा। ठुमरी, धमार, होरी, सादरा, तराना, लक्षण गीत सभी अपने–अपने रूप में परिवर्तनों को स्वीकार करते गए और नए रूप में सामने आते चलें गए। परिवर्तन में जहां पाश्चात्य संगीत का भी अपना पूरा प्रभाव हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत पर था वही फिल्म संगीत ने भी अपनी पूरी भूमिका निभाई।

पाश्चात्य संगीत से हमने हारमोनी और मेलोडी जैसे शब्द लेकर जोकि हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की ही देन थी उन्हें परिवर्तित रूप में प्रस्तुत किया। फिल्म संगीत सबके मन को एकदम से भा जाने वाला संगीत, इसका प्रभाव भी शास्त्रीय संगीत पर आया। मैंने अक्सर लोगों को यह कहते सुना है कि आज युवा वर्ग है वह हमसे बहुत आगे है। आज आप 1 वर्ष के बच्चे के हाथ में मोबाइल पकड़ा दीजिए वह शांत हो जाएगा। टच स्क्रीन को वह बहुत आसानी से यूज करने लगता है। जिस टच स्क्रीन को मेरे और आप जैसे लोग आज भी समझते हुए कुछ क्षण लगा देते है। हम से पहले जो वर्ग था वह हमें अपने से अधिक अग्रसर मानता था। हम अपने से युवा वर्ग को अधिक अग्रसर मानते हैं उसका कारण यदि है तो केवल टेक्नोलॉजी। आज से बहुत ज्यादा समय पूर्व की बात नहीं 25 से 30 वर्ष पूर्व यदि आपको किसी दिग्गज कलाकार का कोई पर्टिकुलर राग का रिकॉर्ड चाहिए तो आपको उसे ढूंढना अत्यंत कठिन हो जाता था लेकिन आज आप राग का नाम लिखकर यू ट्यूब दबाये एक लंबी फेहरिस्त तैयार होकर आपके सामने चली आती है। बड़े गुलाम अली खां साहब, आमिर खां साहब, पंडित भीमसेन जोशी, पंडित हरिप्रसाद चौरसिया न जाने ऐसे अनेकों कितने नाम सिर्फ यू टयूब पर जाकर एक क्लिक की आवश्यकता है। संगीत जगत में एक क्रांति सी आ गई है इस नई एडवांस टेक्नोलॉजी से। आप एक राग सीखिए और यू टयूब पर अपना चैनल बनाकर अपना लिंक डाल दीजिए।

Scanned with OKEN Scanner

इस लेख में यदि Fusion की चर्चा न हो तो विषय पूर्ण नहीं होगा। Fusion ने एक अलग स्वतंत्रता प्रदान की है। कलाकार संगीत के कल को आज से जोड़ कर प्रस्तुति देते है। Learning methodology का स्वरूप भी बदल गया है। संगीत गुरमुखी विद्या है गुरु के मुख से निकली हुई हर वह बात शिष्य के लिए शास्त्र सम्मत है। वर्षों तक गुरु के घर में रहकर गुरु की सेवा करना, उनके साथ जागना, उनके साथ समय व्यतीत करने का एक महत्वपूर्ण कार्य रहता था और साथ–साथ उसे शिक्षा भी मिलती रहती थी लेकिन आज उसमें भी परिवर्तन है। ऑनलाइन क्लास का जमाना है आपको कहीं जाने की जरूरत नहीं बस अपने फोन का स्क्रीन ऑन कीजिए और उस पर अपने गुरु के दर्शन कर उनसे क्लास ग्रहण कर लिजिए। अगर आप चारों और दृष्टि घुमा कर देखें तो आप यह महसूस करेंगे कि प्राचीन समय से लेकर अब तक शास्त्रीय संगीत का प्रचार और प्रसार अत्यधिक बढ़ चुका है। पंडित विष्णु नारायण भातखंडे तथा विष्णु दिगंबर जी जैसे क्रांतिकारी पुरुषों को मैं नमन करती हूं जिन्होंने उस समय में संगीत को संरक्षण एवं सुरक्षित करने का प्रयास किया जब संगीत और संगीतज्ञ दोनों को हीन दृष्टि से देखा जा रहा था। किंतु आज भारतवर्ष के हर महाविद्यालय में संगीत विषय के रूप में फल–फूल रहा है, संगीत गोष्ठियों का आयोजन हो रहा है। चर्चाएं, परिचर्चा, संगीत सम्मेलन, महफिलें, बैठकों का आयोजन हो रहा है। संगीत अपनी पूरी पराकाष्ठा पर है किन्तु क्या हम सभी संतुष्ट है संगीत की उन्नति से। इतना प्रचलित होने के बावजूद कहीं ना कहीं खोखलापन क्यों नजर आ रहा है। कहीं ना कहीं हम सब बेचैन है, परेशान हैं। क्यों आज संगीत आत्मिक शांति या उच्च नाद ब्रह्म स्वरूप को नहीं दर्शा रहा? शायद हमारा धैर्य कम पड़ गया है। समय परिवर्तित हो गया है हमारी Priorities और बदल गई हैं। रियाज का स्थान डिग्रीस ने ले लिया है। शिक्षा का स्थान सिलेबस ने ले लिया है। शिक्षक सिलेबस करवा रहा है और विद्यार्थी सिलेबस सीख रहा है क्योंकि आत्मिक शांति का वह संगीत आपका अत्यधिक समय मांगता है, संयम मांगता है, संतुलन मांगता है जो आज के परिवेश में दे पाना अत्यंत कठिन है। आज का विद्यार्थी शॉर्टकट को अपनाना चाहता है। जल्द से जल्द पंडित भीमसेन जोशी, बड़े गुलाम अली खां या आमिर खान जी के बराबर बैठना चाहते हैं। एक राग सीखने के बाद कुछ ही महीनों में उसे यह लगने लगता है कि अब दूसरा राग शुरू होगा। संगीत का प्रदर्शन अधिक हो गया है और उसे आत्मसात कम किया जा रहा है। चमत्कारिकता, दिखावा, एक के बाद एक तान, एक के बाद एक तोड़ा, तैयारी इसी उधेड़बुन में आज का संगीतज्ञ संगीत की उस पराकाष्ठा को

Scanned with OKEN Scanner

खो रहा है। ऊपर का पहरावा अत्यधिक सुशोभित है किंतु उसके अंदर एक असंतुष्ट खोखलापन समाता चला जा रहा है। पीढ़ी–दर–पीढ़ी गुरु से शिष्य को आने वाली परंपरा आगे तो बढ़ रही किंतु उसकी नींव कमजोर पड़ती जा रही है। ऐसे में आज के युवा वर्ग के लिए यह जरूरी है कि वह धैर्य से, संयम से संगीत को अपने जीवन में उतारे एक मजबूत चरित्र का निर्माण करें। अत्यधिक समय संगीत के प्रति समर्पित करें। अपेक्षाएं संगीत से कम हो और सेवा अधिक हो, संगीत केवल जीविका उपार्जन के लिए ना सीखे बल्कि स्वांत सुखाय का भी ध्यान रखें। तभी हम संगीत से साधना की ओर अग्रसर हो पाएँगे।

Scanned with OKEN Scanner